بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 19.08.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में अरब देश से बाहर के दुष्टता दिखाने वाले विरोधियों के साथ होने वाली लड़ाईयों का वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज, बयान फ़र्मूदा 19 अगस्त 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया- बदरी सहाबियों के वर्णन में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. की ख़िलाफ़त के दौर में होने वाली घटनाओं के वर्णन की श्रंखला में आज शाम देश की ओर बढ़ने वाले दल का वर्णन होगा।

जब आप रज़ी. इस्लाम से विमुख विद्रोहियों का विध्वंस कर चुके तथा अरब देश सुदृढ़ हो चुका तो आपने देश से बाहर के अत्याचार करने वाले विरोधियों में से रोम देश वाले (शाम देश, मौजूदा शाम अथवा सीरिया के शासन को रोमी शासन तथा वहाँ के राजा को क़ैसर-ए-रोम की उपाधि से पुकारा जाता था) से युद्ध करने से सम्बंधित सोचा किन्तु अभी तक इससे किसी को अवगत नहीं किया था, इसी सोच विचार के चलते हज़रत शुरहबील रज़ी. बिन हस्ना आप रज़ी. की सेवा में उपस्थित हुए और निवेदन किया कि ऐ ख़लीफ़ः रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या आप रज़ी. शाम में सैन्य गतिविधि के विषय में सोच रहे हैं? आप रज़ी. ने फ़रमाया- हाँ, इरादा तो है किन्तु अभी किसी को सूचित नहीं किया, तुमने किस कारण से यह सवाल किया है? आप रज़ी. ने निवेदन पूर्वक कहा कि मैंने एक सपना देखा है तथा उसकी रूप रेखा पेश फ़रमाई।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने लम्बा सपना सुन कर इरशाद फ़रमाया- तुम्हारी आँखें ठंडी हों, तुमने अच्छा सपना देखा है और अच्छी ही होगा इन्शाअल्लाह, तुमने इस सपने में विजय की शुभसूचना तथा मेरी मृत्यु की सूचना भी दी है। यह बात कहते हुए आप रज़ी. की आँखों में आँसू आ गए। इसके बाद आप रज़ी. ने उनके सपने का पूरा स्वप्न-फल बयान फ़रमाया जिसमें विजय का विवरण तथा आपके निधन की ख़बरें थीं।

अतएव जब आप रज़ी. ने शाम देश को पराजित करने के लिए सेना तय्यार करने का निश्चय किया तो आप रज़ी. ने सुझाव लेने के लिए हज़रत उमर रज़ी, हज़रत उसमान रज़ी, हज़रत अली रज़ी, हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ी. बिन औफ़, हज़रत तलहा रज़ी, हज़रत ज़ुबैर रज़ी, हज़रत सअद रज़ी. बिन अबी वक़ास, हज़रत उबैदह रज़ी. बिन जर्राह तथा बदर के युद्ध में शामिल होने वालों में से प्रतिष्ठावान मुहाजिर तथा

अन्सार और अन्य सहाबियों को बुलवाया। जब ये सहाबी आप रज़ी. की सेवा में उपस्थित हुए तो आप रज़ी. ने इरशाद फ़रमाया- अल्लाह की अनुकम्पाएँ असंख्य हैं, कर्म उनका बदला नहीं हो सकते, इस बात पर अल्लाह तआला की अत्यधिक स्तुति करो कि उसने तुम पर उपकार किया तथा एक कलमे पर जमा किया.... ....आज अरब के लोग एक उम्मत, एक ही माँ-बाप की संतान हैं, मेरा सुझाव यह है कि मैं इनको रोमियों से युद्ध करने के लिए शाम देश भिजवाऊँ, जो इनमें से मारा गया, वह शहीद तथा जो जीवित रहा, वह इस्लाम दीन का बचाव करते हुए जीवित रहेगा।

हज़रत उमर रज़ी. बिन ख़त्ताब रज़ी. ने निवेदन किया- अल्लाह की क़सम भलाई के जिस मामले में भी हमने आप रज़ी. से आगे बढ़ना चाहा है, आप रज़ी. उसमें सदैव हमसे आगे निकल गए। अल्लाह की क़सम! मैं इसी उद्देश्य के लिए आप रज़ी. स मिलना चाहता था जो आप रज़ी. ने अभी बयान किया है, निःसन्देह आपका सुझाव उचित है और अल्लाह ने आप रज़ी. को उचित मार्ग दर्शन का अनुभव प्रदान किया है। समस्त उपस्थित लोगों ने भी आप रज़ी. के सुझाव का समर्थन करते हुए निवेदन किया! हम आपकी बात सुनेंगे तथा आज्ञा पालन करेंगे, आदेशों की अवहेलना नहीं करेंगे और आप रज़ी. की प्रेरणा पर लब्बैक कहेंगे।

हज़रत बिलाल रज़ी. ने आप रज़ी. के आदेशों पर लोगों में घोषणा की- ऐ लोगो! अपने रोमी दुश्मन से युद्ध करने के लिए शाम देश की ओर चलो और मुसलमानों के अमीर हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन सईद होंगे। शाम देश पर विजय के सम्बंध में सबसे से पहले हज़रत अबू बकर रज़ी. ने 13 हिजरी में एक सेना के साथ हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन सईद को रवाना फ़रमाया। एक रिवायत से ज्ञात होता है कि जब हज़रत अबू बकर रज़ी. ने मुर्तदों के विरुद्ध गयारह सेनाएँ तय्यार करके भिजवाईं तो उस समय ही हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन सईद को शाम देश की सीमाओं की सुरक्षा के लिए तैमा नामक स्थान पर जाने का आदेश देते हुए अपने स्थान से अगले आदेश तक न हटने का निर्देश फ़रमाया था।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने रोमियों के विरुद्ध लड़ाई के लिए मदीने वालों के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों के मुसलमानों को भी तय्यार करना शुरु किया और जिहाद में शामिल होने की प्रेरणा दिलाई अतः इसी ध्येय से आप रज़ी. ने यमन वालों की ओर भी एक पत्र लिखा और उसे हज़रत अनस रज़ी. बिन मालिक के हाथ भेजा। आप रज़ी. ने यमन के लोगों को प्रभाव पूर्ण शैली में सन्देश पहुंचाने के बाद मदीना वापस पहुच कर उनके आगमन की शुभ सूचना हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु को सुनाई।

दूसरी ओर हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन सईद तैमा पहुंच कर वहीं ठहर गए तथा आस पास की अनेक जमाअतें आप रज़ी. से आ मिलीं। रोमियो को जब मुसलमानों की इस महान सेना की सूचना मिली तो उन्होंने अपने आधीन अरबों से शाम के युद्ध के लिए सेनाएँ मांगीं। हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु को लिखित सूचना मिलने पर आप रज़ी. ने हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन सईद को लिखा- तुम आगे बढ़ो, तनिक भी न घबराओ और अल्लाह से सहायता मांगो। आप रज़ी. रोमियों की ओर बढ़े किन्तु उनके बिखर जाने के कारण आप रज़ी. उनके स्थान पर जम गए तथा अधिकांश लोग जो आप रज़ी. के पास जमा थे, वे मुसलमान हो गए। हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु को इसकी सूचना देने पर इरशाद मिला कि तुम आगे बढ़ो परन्तु इतना आगे न निकल जाना कि पीछे से दुश्मन को हमला करने का अवसर मिल जाए। आप

रज़ी. ने लोगों के साथ आगे बढ़ते हुए बाहान नामक पादरी तथा उसकी सेना को पराजित किया, अधिकांश की हत्या कर दी जबकि बाहान ने भाग कर दमिश्क़ देश में शरण ली। इसके विषय में सूचित करके आप रज़ी. ने हज़रत अबू बकर रज़ी. से और अधिक सहायता मांगी जिस पर जैशुलबदाल नामक सेना आप रज़ी. की सहायता के लिए पहुंची।

इसके बाद भी हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु लोगों को शाम देश में युद्ध के लिए प्रेरित करते रहे तथा हज़रत वलीद रज़ी. बिन उतबा को आप रज़ी. की सहायता हेतु शाम पहुंचने का निर्देश दिया। वे जब आप रज़ी. के पास पहुंचे तो उन्होंने बताया कि मदीने वाले अपने भाईयों की सहायता करने को व्याकुल हैं और हज़रत अबू बकर रज़ी. सेनाएँ भिजवाने की व्यवस्था कर रहे हैं, यह सुन कर आप रज़ी. की ख़ुशी की कोई सीमा न रही तथा इस विचार से कि रोमियों पर विजय पाने का गर्व उन्हीं के भाग्य में आए, हज़रत वलीद रज़ी. बिन उतबा को साथ लेकर रोमियों की उस महान सेना पर हमला करना चाहा जिसका नेतृत्व उनका सेनापति बाहान कर रहा था। इस प्रकार आप रज़ी. ने हमला करते समय सफलता की भावना के अंतर्गत ख़लीफ़-ए-वक़्त के निर्देश को अनदेखा कर दिया तथा अपने पीछे की ओर से होने वाले हमले को भुला बैठे तथा अन्य अधिकारियों के पहुंचने से पहले ही रोमियों से युद्ध आरम्भ कर दिया। आप रज़ी. दुश्मन की सेना में आगे ही आगे घुसते चले गए। उस समय आप रज़ी. के साथ हज़रत वलीद रज़ी. बिन उक़बा के अतिरिक्त हज़रत जुलकलाअ रज़ी. और हज़रत इकरिमा रज़ी. भी थे। हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन सईद अपने बेटे तथा साथियों की बाहान के हाथों शहादत की सूचना मिलने पर वहाँ से भाग निकले, और अन्य कई साथी भी इसके पश्चात सेना से विमुक्त हो गए किन्तु हज़रत इकरिमा रज़ी. अपनी जगह से न हटे बल्कि मुसलमानों की सहायता करते रहे और बाहान तथा उसकी सेनाओं को हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन सईद का पीछा करने से रोका और आप रज़ी. पराजित होते हुए मक्का और मदीना के बीच एक स्थान जुलमर्वा तक पहुंच गए। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने इसकी सूचना मिलने पर आप रज़ी. पर अप्रसन्नता व्यक्त की तथा मदीना में दाख़िल होने की अनुमति न दी परन्तु बाद में इसकी आज्ञा मिलने पर मदीना में दाख़िल होकर आप रज़ी. से अपने इस काम के लिए क्षमा मांगी।

हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन सईद की इस विफलता के बावजूद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. के साहस एवं उत्साह में कदाचित कोई कमी न आई। जब आप रज़ी. को यह स्चना मिली कि हज़रत इकरिमा रज़ी. और हज़रत जुलकलाअ रज़ी. इस्लाम की सेनाओं को दुश्मन के चंगुल से बचा कर शाम देश की सीमाओं पर वापस ले आए हैं और वहाँ सहायता की प्रतीक्षा में हैं तो आप रज़ी. ने एक पल नष्ट किए बिना सहायता भिजवाने का प्रबन्ध शुरु कर दिया। आप रज़ी. ने इसके लिए चार बड़ी सेनाएँ तय्यार कीं जिन्हें शाम के विभिन्न क्षेत्रों की ओर रवाना किया। सहायता के रूप में भेजी जाने वाली सेनाओं में से पहली सेना हज़रत यज़ीद रज़ी. बिन अबू सुफ़यान रज़ी. के नेतृत्व में रवाना फ़रमाया जिसका लक्ष्य दमिश्क़ पर विजय तथा अन्य तीन सेनाओं की सहायता करना था। इस अवसर पर हज़रत यज़ीद रज़ी. को उपदेश देते हुए हज़रत अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया- लोगों में सबसे अधिक अल्लाह के निकट वह मनुष्य है जो अपने कर्म के द्वारा सबसे अधिक उसके साथ निकटता प्राप्त करे। जब तुम अपनी सेना के पास पहुंचो तो उसके साथ अच्छा व्यवहार करना, उनके साथ भलाई से पेश आना तथा जब उन्हें उपदेश एवं निर्देश देना तो संक्षेप में

देना, क्यूँकि अत्यधिक बात चीत करना अनेक बातों को भुला देता है। अपने आपको ठीक रखोगे तो लोग स्वयं ठीक हो जाएँगे और नमाज़ों को उनके उचित समय पर रकूअ एवं सजदों को पूर्णतः अदा करना, उनमें विनयता एवं विनम्रता के साथ ईश्वरीय भय का ध्यान रखना और जब दुश्मन के राजदूत तुम्हारे पास आएँ तो उनको कम से कम ठहराओ तथा जल्दी अपने पास से विदा कर दो। उन्हें अपनी सेना के जमघटे में रखना, अपने लोगों को उनके साथ बात करने से रोक देना। जब तुम स्वयं उनसे बात करो तो अपने भद प्रकट न करना अन्यथा तुम्हारा मामला उलझ जाएगा। जिससे सुझाव लेना हो उसको फिर हर एक सूक्ष्म बात भी बतानी है ताकि वह उचित सुझाव दे सके और कम से कम हानि हो। रात के समय अपने दोस्तों से बातें करो तुम्हें बहुत सी ख़बरें मिल जाएँगी। सुरक्षा दल में अधिक लोगों को रखना तथा उन्हें अपनी सेना में फैला देना तथा प्रायः सूचित किए बिना उनकी चौकियों का निरीक्षण करना। जिसे अपनी सुरक्षा चौकी में ग़ाफ़िल पाओ उसको अच्छी तरह दंडित करना तथा दंड देते समय अति से काम मत लेना। शुरु रात की जो ड्यूटी है वह लम्बी रखो क्यूँकि वह जागना आसान है, उसमे तथा अन्तिम रात की बारी तनिक, जो ड्यूटी है, वह कम हो। दंड के योग्य व्यक्ति को दंड देने से मत डरना, उसमें नर्मी न करना, दंड देने में जल्दी न करना तथा न ही बिल्कुल अनदेखा करना। फिर फ़रमाया कि अपनी सेना से ग़ाफ़िल न रहना कि वह भ्रष्ट हो जाए तथा उनकी जासूसी करके उनको बदनाम न करना, उनके भेद की बातें लोगों से न बयान करना, उनके प्रत्यक्ष को पर्याप्त समझना, बेकार तरह लोगों के पास मत बैठना, सच्चे तथा वफ़ादार लोगों के पास बैठना। दुश्मन से मुठभेड़ के समय डट जाना। कायर न बनना अन्यथा लोग भी कायर हो जाएंगे। माले ग़नीमत में बेईमानी करने से बचना, यह मोहताजी के निकट करती है तथा विजय एवं सहायता पाना रोकती है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि यह एक सम्पूर्ण कार्य-पद्धति है जो हर एक लीडर के लिए तथा हर एक ओहदेदार के लिए, काम करने के लिए, अमल करने के लिए अति आवश्यक है।

दूसरी सेना आरम्भिक इस्लाम लाने वालों में से तथा ख़िलाफ़ते राशिदा के प्रसिद्ध सेनापति हज़रत शुरहबील रज़ी. बिन हस्ना की थी जबकि तीसरी सेना अमीनुल उम्मत तथा अश्रहेमुबश्शरह में शामिल भाग्य शाली हज़रत अबू उबैदा रज़ी. बिन जर्राह की थी जिनके साथ हज़रत अबू बकर रज़ी. ने अरब के घुड़सवारों में से एक महान प्रतिष्ठा रखने वाले व्यक्ति हज़रत क़ैस रज़ी. बिन हुबैरा को भी रवाना फ़रमाया। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- यह शेष वर्णन है जो आगे भी चलता रहेगा।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह ने दिनांक 12 अगस्त 2022 को रबवा में शहीद होने वाले दारुरहमत के निवासी मुकर्रम नसीर अहमद साहब पुत्र अब्दुल ग़नी साहब का विस्तार पूर्वक सद्वर्णन फ़रमाया और जुम्अः की नमाज़ के बाद उनकी नमाज़े जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाने की घाषणा फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131